ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 20 कुल पृष्ठ-8 12 से 18 सितम्बर, 2024 दयानन्दाब्द 200 सृष्टि सम्वत् 1960853125 सम्वत् 2081 भा. शु-09

लाखों बंधुआ मजदूरों को पुनर्वासित करवाने वाले, मानव अधिकारों के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवक्ता, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को समर्पित क्रांतिकारी आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के सभागार में स्मृति सभा का भव्य आयोजन

स्वामी अग्निवेश जी एक महामानव थे – गोस्वामी सुशील जी महाराज

स्वामी अग्निवेश जी मानव अधिकारों के प्रबल प्रवक्ता थे – स्वामी आर्यवेश

स्वामी अग्निवेश महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी थे – स्वामी प्रणवानन्द

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की चौथी पुण्यतिथि के अवसर पर दिनांक 11 सितम्बर, 2024 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–2 के सभागार में स्मृति सभा का विशेष आयोजन किया गया। सभा का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। स्मृति सभा में सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, अनेक गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री क्रांतिकारी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के कार्यकारी प्रधान श्री रामनिवास आर्य नारनौल, युवा सामाजिक कार्यकर्ता श्री हवा सिंह हुड्डा, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या, सर्वधर्म संवाद के संयोजक श्री मनु सिंह, श्री राजेश याज्ञिक अध्यक्ष बंधुआ मुक्ति मोर्चा राजस्थान आदि के अतिरिक्त विशेष रूप से भारतीय सर्वधर्म संसद के अध्यक्ष गोस्वामी सुशील जी महाराज, जैन सन्त श्री विवेक मुनि जी, मौलाना शाहीन कासमी, डॉ. एम. डी. थॉमस, बौद्ध सन्त आचार्य येशी जी, वरिष्ठ पत्रकार श्री विनोद अग्निहोत्री आदि प्रमुख धर्माचार्य भी स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पधारे।

स्मृति सभा में सर्वप्रथम सर्वधर्म संसद के अध्यक्ष गोस्वामी सुशील जी महाराज, जैन मुनि विवेक जी, मौलाना शाहीन कासमी जी, आचार्य येसी जी, डॉ. एम.डी. थॉमस जी, स्वामी प्रणवानन्द जी को शॉल एवं पुस्तक भेंटकर सम्मानित किया गया। इनके अतिरिक्त बंधुआ मुक्ति मोर्चा के सक्रिय कार्यकर्ता सर्वश्री राजेश याज्ञिक जी राजस्थान, मायाराम फरीदाबाद, रामशरण जी पाली, बहन शशि अहिरवार जी गुना, शिवपुरी, श्री नत्थू जी चित्रकूट, अश्वनी जी, भानू प्रसाद जी गढ़ी को शॉल एवं 11–11 हजार रुपये देकर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् सभी वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

गोस्वामी सुशील जी महाराज ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी महाराज एक संत थे। उनके नेतृत्व में सर्वधर्म संसद की स्थापना हुई। स्वामी अग्निवेश जी कभी सिद्धांत से समझौता नहीं करते थे। वे आज हम सभी के बीच में भले ही नहीं हैं परन्तु वे सदैव अमर रहेंगे। हम सभी को मिलकर उनके अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी का शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

युवा पीढ़ी का दायित्व एवं कर्त्तव्य

— पं० शिवदयालु

भौतिक सुख समृद्धि में आकण्ठ डूबा पाश्चात्य जगत् आज अपनी मायावी सभ्यता के भार से स्वयं टूट रहा है। यूरोप हो या अमेरिका युवा पीढ़ी का मानस विक्षोभ और विद्रोह ग्रस्त है। तड़क भड़क पूर्ण परिधानों में लिपटे बदन आज प्रायः नग्न होने तथा मूल्यवान् वस्त्रों के स्थान पर मोटे, झोटे कपड़ों में तन ढाकने में ही सन्तोष की अनुभूति करने लगे हैं। गगन चुम्बी वातानुकूलित अट्टालिकाएं आज उनके मन में वितृष्णा जगा रही हैं और हिमाच्छादित शैल शिखरों के प्रति उनकी कशिश बढ़ती जा रही है। टेम्स, वोल्गा और मिसीसिपी की लहरों की अपेक्षा गंगा यमुना की नीलधारा ही उनके मन में अधिक आकर्षण जगा रही है। तात्पर्य यह है कि वैभव और विलास का केन्द्र बनी पाश्चात्य नगरियों से युवा पीढ़ी भारत की ओर भागना चाहती है, भाग रही है। उसके मन में भारत दर्शन की लालसा, भारतीय युवकों के मन में जगी विदेश दर्शन की इच्छा की तुलना में कहीं अधिक तीव्र हो उठी है। और उसका परिणाम ही है हिमालय की उपत्यकाओं और शिखरों में स्थित नगरियों की सड़क पर भटकती गौरांग युवा पीढ़ी। युवक और युवतियां। सुशिक्षित किन्तु अपनी वेशभूषा से ही उखड़े से लगने वाले।

एक प्रश्न चिन्ह !

इस स्थिति में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि आज जो भारत अपनी आध्यात्मिक ज्ञान की थाती के कारण विश्व भर की जिज्ञासु युवा पीढ़ी के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बन रहा है, उस महान् पुण्यभूमि की गोदी में जन्मी, पली और बढ़ी युवा पीढ़ी क्या जगत् को दिशादान देगी अथवा स्वयं भी उस रपटीली राह पर ही पग बढ़ाएगी, जिससे आज पाश्चात्य युवक लौट रहा है। क्या उस सभ्यता की उतरन को ग्रहण करेगी जिसे यूरोप ने त्यागा है। इस प्रश्न का उत्तर देना तो सरल नहीं। किन्तु यह बात निश्चयपूर्वक कही जा सकती है कि यदि युवा पीढ़ी अपने पूर्वजों के सत्य इतिहास, स्वदेश के प्रति गौरव एवं वैदिक ज्ञान गरिमा से संपृक्त हो सकी तो वह मनु के इस उद्घोष को चरितार्थ कर सकेगी—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

हाँ, उसे इस ओर प्रवृत्त करने का दायित्व है उन जगदेखे जीवनों का जो युवा मनःस्थिति में आए बिखराव से चिंतित तो है, भटकाव से दुःखी तो है, किन्तु युवकों पर अपने जीवन के अनुभवों की थाती को लुटाते, जिन्हें संकोच सताता है। आज कई बृद्धजन युवा पीढ़ी के विरुद्ध नास्तिक हो जाने का फतवा भी अचानक दे बैठते हैं और स्वकर्त्तव्य की इतना कह देने मात्र में ही इतिश्री मान बैठते हैं। यह वयोवृद्ध पीढ़ी युवक वर्ग को तभी सन्मार्ग दिखा सकती है, जब इस तथ्य को हृदयंगम करले कि 'ईश्वर में विश्वास न करने वाला जितना नास्तिक है, उससे बड़ा नास्तिक वह कि जो स्वयं में विश्वास नहीं रखता।' और इस दृष्टि से हर निराश मन में यह भाव जाग सकता है कि युवा पीढ़ी का मन बिखराव से ग्रस्त भले ही हो किन्तु उसे नास्तिक की संज्ञा देना यदि पूर्णरूपेण नहीं तो बड़ी सीमा तक तो निश्चित रूप से ही गलत होगा।

आदर्श आवश्यक और.....

किन्तु जहां वृद्धजनों का एक दायित्व है, वहां युवा पीढ़ी का भी यह पावन कर्त्तव्य है कि वह अपनी भटकन को स्वयं ही मिटाने की आस्था अपने मानस में जगाए और यह तभी संभव है जब वह एक आदर्श को समक्ष रखकर कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ हो। क्योंकि उसे स्मरण रखना होगा कि आदर्श विहीन मनुष्य ५० हजार गलतियाँ करेगा तो किसी आदर्श को समक्ष रखकर चलने वाला हजार ही।

युवा पीढ़ी को स्वसाहस को भी जगाना होगा। आज आर्थिक विपन्नता के इस युग में उसे अपने समक्ष समस्याओं का जो महासागर लहराता दिखाई दे रहा है, उसे पार करने के लिए उसे महावीर हनुमान, के सागरोल्लंघन का आख्यान तथा श्रीकृष्ण के महान अभियान एवं देव दयानन्द के दिग्विजय अनुष्ठान के उदाहरण अपने समक्ष रखने होंगे। उन्हें समझना होगा कि यदि वे नाना प्रलोभनों के बावजूद सत्य पर आरूढ़ रहे तो उन्हें ऐसी महान् शक्ति प्राप्त होगी जिसके समक्ष लोग ऐसी कोई बात कहते हुए भी डरेंगे जिसे वह सत्य नहीं समझते। किन्तु इस स्थिति में आने के लिए उन्हें कपट और प्रपंचों से अपने हृदय मंदिर को सर्वथा स्वच्छ रखना होगा।

आदर्श कौन हो?

वस्तुतः आज की स्थिति में प्रत्येक युवक को हनुमान के जीवन को अपना आदर्श बनाना होगा। उसे स्मरण रखना होगा कि हनुमान ने किस प्रकार श्रीराम की आज्ञा प्राप्त होते ही महोदधि की उत्ताल तरंगों को भी चुनौती देने का साहस अपने हृदय में संजोया था। उन्हें याद रखना होगा कि हनुमान को अपने लक्ष्य की पूर्ति में इसीलिए सफलता मिली थी कि वे जहां अद्भुत प्रतिभा के धनी थे, वहां सम्पूर्ण रूपेण इन्द्रियजित् भी। आज के आर्य युवक को अपना जीवन समर्पण के उसी महान् आदर्श पर खड़ा करना होगा, क्योंकि उसके माध्यम से ही क्रमशः अन्य समग्र आदर्श जीवन में प्रकाशित होंगे। गुरु आज्ञा का सर्वतोभावेन पालन और अटूट ब्रह्मचर्य यही है सफलता की कुंजी।

आत्म संयम का विकास हो !

आत्म संयम का विकास भी युवा पीढ़ी में होना नितांत आवश्यक है, क्योंकि संयमीजन किसी भी बाह्य वस्तु से प्रभावित नहीं हो सकते। असंयत और निरंकुश मन मानव को अधोगामी बनाकर उसके विनाश का पथ प्रशस्त करता है तो संयत मन सही अर्थों में रक्षक और प्रेरक है। आत्म संयम का विकास जीवन में गंभीरता और बालतुल्य सरलता के पारस्परिक योग पर निर्भर है। महर्षि दयानन्द ने मतान्धता से मुक्ति का जो आह्वान किया था वह भी इसकी उपलब्धि में सहायक है।

ऐसे विचारों से स्वयं को बचाना भी आवश्यक है जो आत्मा की पावनता, शुचिता और शक्ति को संकुचित कर देते हैं। उन्हें ही कुविचार की संज्ञा दी जाती है। इनके स्थान पर अपने मन को ऐसे कार्यों की ओर लगाना ही जीवन को साफल्य मंडित बनाने का मर्म है जो आत्मा की अभिव्यक्ति में सहायक है।

प्रत्येक युवक को स्मरण रहे.....

वर्त्तमान परिस्थितियों में स्वदायित्व की पूर्ति के इच्छुक प्रत्येक युवक को यह स्मरण रखना चाहिए कि अर्थहीन विषयों पर छिड़ी पुरानी लड़ाइयों को त्याग देना ही युग की मांग है। प्रत्येक भारतीय युवक को यह स्मरण रखना चाहिए कि अनेक शताब्दियों तक भारत के दासता की शृंखला में आबद्ध रहने के कारण जहां अन्य कई होंगे वहाँ एक बड़ा कारण यह भी रहा कि पुष्ट मस्तिष्क वाले सैंकड़ों व्यक्ति इसी प्रकार के विषयों को लेकर वर्षों तक तर्क वितर्क में उलझते रहे थे कि लोटा भरकर पानी दाएं हाथ से दिया, जाए अथवा बाएं हाथ से। हाथ तीन बार धोए जाएं अथवा चार बार। कुल्ला पाँच बार करना उचित है या छः बार। ऐसे व्यर्थ के प्रश्नों के लिए तर्क वितर्क में ही जीवन बिता देने वाले और ऐसे विषयों पर नितांत गवेषणापूर्ण दर्शन की रचना कर डालने वाले पंडितों से कोई मार्ग दर्शन न मिल सकेगा।

महान् बनें किन्तु....

युवा पीढ़ी को इस सत्य का सदैव स्मरण रखना होगा कि त्याग के बिना कोई भी महान् कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। इस जगत् को दिशा दान देने के लिए भारतीय युवा पीढ़ी को नाम—यश, ऐश्वर्य और हास विलास ही नहीं अपितु जीवन के समर्पण की भी सिद्धता करनी होगी।

उन्हें इस आह्वान का स्मरण रखना होगा।
जीवन कर्म सहज भीषण है।
उसका सब सुख केवल क्षण है।
यद्यपि लक्ष्य अदृश्य धूमिल है।
फिर भी वीर हृदय ! हलचल है।
अंधकार को चीर अभय हो—
बढ़ो साहसी ! जग विजयी हो।

यही आकांक्षा उन्हें पाश्चात्य युवा पीढ़ी के मार्गदर्शन में सफलता प्रदान करेगी।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/— रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई—मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्चा देना होगा।

-: प्रकाशक :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष — 011—23274771, 011—42415359, मो.:—9868211979, 8218863689
ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

शिक्षा में क्रान्ति का संदर्भ

– डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'

शिक्षा का मुद्दा कोई नया मुद्दा नहीं है। आजादी से पहले और आजादी से बाद शिक्षा पर खासी चर्चा होती रही है। आजादी से पहले तो हमारे सामने कोई विकल्प ही नहीं था, मैकाले को तो हमें अपने कंधों पर ढोना ही था, पर दुःख इस बात का है कि हमारी ऐसी क्या मजबूरी है कि हम अभी भी मैकाले के बेताल को अपने कंधों से क्यों नहीं उतार पा रहे हैं? हमें आजादी मिले आधी सदी से अधिक का वक्त गुजर गया पर हमारे देश में दी जा रही शिक्षा अब जमी हुई झील की तरह है जिसमें कोई जुम्बिश नहीं, कोई हलचल नहीं, कोई रवानी नहीं, एक अजीब-सा ठहराव है हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में और हम शतुरमुर्गी मुद्रा में वक्त की हकीकतों से आंखें चुरा रहे हैं। आखिर कब तक चलेगा यह सिलसिला? कभी पूछा है हमने अपने आपसे? शिक्षा सुधार के मसले पर बैठाये अनेक आयोगों की रिपोर्टें धूल चाट रही हैं, 1986 की नई शिक्षा नीति और कार्य योजना (प्लान ऑव एक्शन) अपनी सब अच्छी बातों के बावजूद अभी तक अमली जामा नहीं पहन पाई है। शिक्षा-सुधार आयोगों की रिपोर्टों में शिक्षा में आमूल परिवर्तन के दिशा-निर्देश हैं, नई शिक्षा नीति में वह सब कुछ है जो एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति में होना चाहिए पर क्या कारण है कि हमारी वर्तमान शिक्षा लचर है और पाण्डुरोग से पीड़ित है। अपने इष्ट उद्देश्यों में वह क्यों सफल नहीं हो पा रही है इस सवाल पर हमें पूरी संजीदगी से विचार करना चाहिए। इसके स्थान पर जो कुछ सामने है उसी को पूरी शिद्दत से क्रियान्वित करने की कोशिश करनी चाहिए। शिक्षा दर्शन पर अब बहसें बंद होनी चाहिए और पूरे देश को संकल्प के साथ शिक्षा में क्रान्ति की भूमिका तैयार करनी चाहिए। एक दूसरे पर दोषारोपण करने से अथवा शिक्षा व्यवस्था की विफलता पर मर्सिया पढ़ने से काम नहीं चलेगा। इसकी जरूरत भी नहीं है। बस, एक राष्ट्रीय इच्छा शक्ति का पाथेय लेकर हम शिक्षा में क्रान्ति की मुहिम छेड़ सकते हैं। शिक्षा के सम्बन्ध में वे एक तरह से मुक्कमल सिफारिशें हैं, पर हमें सोचना है कि उन सिफारिशों को लागू कैसे किया जाये। इसमें परेशानियां हैं, यह हम सब जानते हैं। लोकतंत्र की अपनी प्रकृति होती है उसी के मुताबिक देश को चलाना पड़ता है। देश कोई फौज की प्लाटून तो नहीं होता कि कमाण्ड देते ही सभी एक दम अटेन्शन की मुद्रा में आ जायें और रातों रात क्रान्ति का बिगुल बज उठे। इसके लिए लोकमत बनाना बहुत आवश्यक है, क्रान्ति में उसे शामिल करना बहुत लाजिमी है। इसके लिए जरूरी है कि हम स्वयं यह जानें कि शिक्षा में आज हमारी क्या प्राथमिकताएं हों, उन्हें पूरा करने के लिए हमारी क्या रणनीति हो और शिक्षा में व्याप्त समस्याओं का हमारे पास क्या समाधान हो। वक्त की पदचापों के साथ हम शिक्षा को कैसे बदलें, यह समझने में हमारे दिमाग में कोई गफलत नहीं होनी चाहिए। हाँ, वक्त बेवक्त किये जाने वाले तुगलकी शिक्षा प्रयोगों से हमें अवश्य सावधान रहना चाहिए। शिक्षा सम्बन्धी बात करते समय हमें अपनी राजनीतिक पक्षधरता का बाना उतार कर पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर देश के कल्याण हेतु शिक्षा के बारे में स्वस्थ मन से चिन्तन, मनन, विश्लेषण और निराकरण करना चाहिए। शिक्षा में क्रान्ति लाने के लिए शिक्षा से जुड़े प्रत्येक घटक को उसी संकल्प, समर्पण राष्ट्रहित चिन्तन के साथ प्रवृत्त होना चाहिए। पर हममें से कितने लोग हैं जो अपनी ड्यूटी को सही अंजाम देते हैं? क्या छात्रों को संस्कारित करना, उन्हें जीवन की राह दिखाना, शिक्षकों, अभिभावकों तथा अन्य सामाजिकों के कर्त्तव्य का अंग नहीं होना चाहिए, क्या शिक्षा को विसंगतियों से मुक्त कर उसे वक्त के मुताबिक ढालना हमारा दायित्व नहीं है, देश में श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण हमारी प्राथमिकता नहीं होनी चाहिए? सुरक्षा कर्मियों की मौत, दुश्मन से सरहद पर जूझने वाले हमारे जवानों की कुर्बानी हमें भीतर से क्यों नहीं झकझोरती? हम भीतर से क्यों नहीं हिल जाते? हम उनकी मौत को महज एक खबर समझकर उनको क्यों भूल जाते हैं। बहरहाल शिक्षा में क्रान्ति के लिए इसी जुनून की जरूरत है, इसी उत्कट भावना की दरकारहै, राष्ट्र में व्यक्तिगत हितों और स्वार्थों की कुर्बानी देने की आवश्यकता है। शिक्षा गर्त में जाए, मीडिया हमारी पीढ़ी को मटियामेट करता रहे, भ्रष्टाचरण का बोलबाला होता रहे, देश भाड़ में जाये, हमें इससे क्या? इस प्रकार का चिन्तन राष्ट्र के हित में नहीं है। अन्याय, शोषण, विसंगतियों का प्रतिरोध न करना और यथास्थिति के खेल में पड़े सड़ते रहना किसी भी क्रान्ति को जन्म नहीं दे सकता। देश का अहित वे सबसे अधिक करते हैं जो वक्त की आवाज से बेखबर रहकर जो ''जैसा चल रहा है, ठीक है'' जैसी सोच लेकर अपना मुँह ढांप कर सोते रहते हैं। क्रान्ति के सूत्रधार वे होते हैं जो यथा स्थिति को तोड़कर समाज में एक नये लोक कल्याणकारी बदलाव की भूमिका तैयार करते हैं। शिक्षा क्रान्ति की अगवानी करने वाले ऐसे लोगों की ही आज देश को जरूरत है। अब विचार करें कि शिक्षा में क्रान्ति का हमारा मॉडल क्या हो? खासतौर पर उस स्थिति में जब कि हम नई सहस्राब्दि के द्वार पर खड़े हैं, एक ग्लोबल विलेज के अंग हैं, सूचना टेक्नोलॉजी की गिरफ्त में हैं, बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी, सूखा अकाल, भ्रष्टाचरण आदि की चपेट में हैं। हमारी दृष्टि में हमारे आदर्श बेमानी लगते हैं, उसके बारे में बात करना पिछड़ापन समझा जाता है, और नग्नता, बेहयायी, उच्छृंखलता, अंग प्रदर्शन, आज माडर्न होने की सनद समझे जाते हैं। अपनी मातृ भाषा की बात करते ही हमें उबकी आती है, अंग्रेजी और अंग्रेजियत से हमें रोमांस है। अंग्रेजी स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ाना एक स्टेट्स सिम्बल है, सरकारी स्कूलों अथवा हिन्दी-माध्यम के स्कूलों के छात्र बेचारे हैं। वर्गहीन समाज का सपना संजोकर चलने वाला लोक कल्याणकारी अपना देश वर्गों पर वर्ग बनाता जा रहा है। आरक्षण-व्यवस्था ने समाज को बांटा है, जोड़ा नहीं है। ऐसे बदहाल मंजर में शिक्षा में क्रान्ति के बुनियादी सरोकार क्या हों तथा उन सरोकारों को एक समयबद्ध कार्य योजना के अन्तर्गत कैसे हासिल करना चाहिए। मेरे विचार से शैक्षणिक क्रान्ति के सम्बन्ध में चिन्तन करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं पर गौर करना मुनासिब होगा :-

1. देश में सच्चे नागरिक कैसे बनें, इस पर शिक्षा-क्रान्ति के सूत्रधारों को विशेष ध्यान देना होगा। ऐसे नागरिक जो सर्वरूपेण, स्वस्थ, राष्ट्रभक्त, चरित्रवान कर्त्तव्यनिष्ठ और व्यापक दृष्टिकोण सम्पन्न हों। यह शिक्षा क्रम, शिशु-शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक चलना चाहिए। तभी सच्ची नागरिकता उनका स्वभाव बन पायेगी। सच्चे नागरिक बनने की प्रक्रिया एक संश्लिष्ट प्रक्रिया होगी जो परिवार से लेकर शिक्षालयों तथा समाज तक पहुँचेगी। इसमें शिक्षक, अभिभावक, छात्र तथा शासन सभी को, मिलाकर प्रयत्न करना होगा। केवल पाठ्यक्रमों से अच्छे नागरिक नहीं बनाये जा सकते। बड़ों को शिक्षकों को, अभिभावकों को तथा राजनेताओं को सबसे पहले इस शिक्षा प्रक्रिया से गुजरना होगा। इसलिए शिक्षा क्रान्ति का नारा होना चाहिए ''सद्नागरिक-निर्माण'' हेतु शिक्षा।

2. शिक्षा क्रान्ति का दूसरा नारा होना चाहिए रोजगार के लिए शिक्षा। इसके अन्तर्गत हमें स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार छात्रों को विभिन्न व्यवसायों में दक्षता प्राप्त करा कर स्वरोजगार में प्रवृत्त होकर अपना मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। यह सही है कि जनसंख्या के अनुपात में रोजगार कम हैं और व्हाइट कालर जॉब तो और भी कम। ऐसी स्थिति में श्रम की महत्ता का भाव छात्रों में गहरे तक उतारना पड़ेगा तथा वक्त की रफ्तार के मुताबिक अपना रोजगार खुद को ही तलाशना पड़ेगा। सरकार पर आश्रित रहना शायद अधिक दूर तक हमारा साथ न दे सके। बड़ी-बड़ी डिग्रियों के व्यामोह को छोड़कर जितनी जल्दी हो छात्रों को किसी न किसी रोजगार के लिए अपने को तैयार कर लेना चाहिए। निरुद्देश्य उच्च शिक्षा की मृगमरीचिका में फंसकर अपना समय बर्बाद करना कोई बुद्धिमानी नहीं है।

रोजगार हेतु शिक्षा की शुरुआत स्कूलों से ही होनी चाहिए। इसमें शिक्षक तथा अभिभावक उत्प्रेरक और मार्गदर्शक का कार्य कर सकते हैं। हाँ, प्रतिभाशाली, साधन सम्पन्न छात्र उच्च पदों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त कर ऊँची नौकरियों को प्राप्त करने की कोशिश अवश्य कर सकते हैं। पर यह जरूरी है कि छात्र की क्षमता का प्रारम्भ से ही आकलन कर लिया जाये जिससे कि उसे बाद में निराश और कुंठित न होना पड़े।

3. शिक्षा क्रान्ति का तीसरा नारा होना चाहिए वैज्ञानिक - दृष्टि (साइंन्टिफिक टैम्पर) का विकास तथा एक वैश्विक-दृष्टि का निर्माण। विद्या के सम्बन्ध में कहा गया है कि जो हमें मुक्त करे वह विद्या है। किससे मुक्त करे? हमारी हर प्रकार की संकीर्णताओं से, हमारे अंधविश्वासों से, हमारे पूर्वाग्रहों से, हमारी कमजोरियों से आदि-आदि। यह तभी होगा जब हम चीजों को विवेकपूर्ण ढंग से उनको सही परिप्रेक्ष्य में देखने की आदत डालेंगे। इसके लिए वैज्ञानिक दृष्टि का होना बहुत जरूरी है। इसका शिक्षण तथा अभ्यास प्रारम्भ से ही होना चाहिए। कहना न होगा कि जब हममें एक साइन्टिफिक टैम्पर आ जाता है तो हमारी वैश्विक दृष्टि का विकास होने लगता है।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन – पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

पृष्ठ 1 का शेष

स्वामी अग्निवेश जी एक निर्भीक संन्यासी थे – स्वामी आदित्यवेश

स्वामी अग्निवेश जी सदैव आन्दोलनरत रहे – विनोद अग्निहोत्री

स्वामी अग्निवेश जी अन्तिम सांस तक गरीब, बेसहारा बंधुआ मजदूरों की लड़ाई लड़ते रहे – बिरजानन्द एडवोकेट

संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाओं को सुनाया। स्वामी अग्निवेश जी ने अपनी सारी सुख–सुविधाओं को त्यागकर मानवता की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करके हरियाणा को अपनी कर्मस्थली बनाकर कार्य प्रारम्भ किया।

अनेक गुरुकुलों के संस्थापक एवं संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा कि एक बार मैंने स्वामी अग्निवेश जी से पूछा कि आप आर्य हो या आर्य समाजी हो, तो उन्होंने कहा कि मैं आर्य हूँ। स्वामी अग्निवेश जी का चिन्तन और कार्य हम सभी को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। वे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सच्चे अनुयायी थे।

क्रांतिकारी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी का स्पष्ट कहना था कि सभी को रोटी, कपड़ा, मकान और चिकित्सा की सुविधा समान रूप से मिलनी चाहिए। स्वामी अग्निवेश जी सच्चाई को कहने में कभी चूकते नहीं थे। वे एक निर्भीक संन्यासी थे।

जैन सन्त श्री विवेक मुनि जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी का पूरा जीवन क्रांतिकारी था। वे आजीवन समाज की भलाई के लिए संघर्ष करते रहे और कभी भी मानवता विरोधी बातों को स्वीकार नहीं किया। ऐसे महामानव धरती पर कभी–कभी पैदा होते हैं।

मौलाना शाहीन कासमी जी ने स्वामी अग्निवेश जी को शायरी के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी के जीवन से हमेशा प्रेरणा ली जा सकती है। स्वामी जी अपने जीवन में जिन–जिन मुद्दों को उठाया वे सभी मुद्दे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के मुद्दे हैं। स्वामी अग्निवेश जी मानवता के पुजारी थे। स्वामी अग्निवेश जी किसी भी धर्म, मजहब में कमी देखते थे तो वे उस अवश्य बोलते थे। उन्होंने कभी मुस्लिम तुष्टीकरण की बात नहीं की।

वरिष्ठ पत्रकार श्री विनोद अग्निहोत्री जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी से मेरा काफी पुराना सम्पर्क था। उन्होंने कहा कि स्वामी जी की समाज के प्रति प्रतिबद्धता थी। देश और विदेश में कहीं भी हो वे गरीब, मजदूर, किसान के पक्ष में खड़े रहते थे। सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करते थे। उन्होंने कहा कि स्वामी जी साहसी और

निर्भीक संन्यासी थे। स्वामी अग्निवेश जी का अचानक हम सभी के बीच से चले जाना जहाँ मैं अपनी व्यक्तिगत क्षति मानता हूँ वहीं समाज एवं राष्ट्र की भी बहुत बड़ी क्षति हुई है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के कार्यकारी प्रधान श्री राम निवास आर्य जी ने स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें गरीब, मजदूर, बेसहारा लोगों का मसीहा बताया।

स्वामी विजयवेश जी ने स्वामी अग्निवेश जी को एक संघर्षशील संन्यासी की संज्ञा दी।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने कहा कि जिन कार्यों को कई वर्षों तक कोई नहीं कर पाया, उसे स्वामी अग्निवेश जी ने करके दिखाया। चाहे वह सती प्रथा के खिलाफ कानून बनवाने वाली बात हो या अन्य आंदोलन रहे हों स्वामी जी ने बढ़–चढ़कर नेतृत्व किया। हम उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए कृत संकल्पित हैं।

श्री मनु सिंह जी ने स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि हम सभी को यह चिन्तन करने की आवश्यकता है कि स्वामी जी द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्यों को हम कितना आगे बढ़ा पाये हैं।

बहन शशि अहिरवार ने अपनी ओर से श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी हम सभी के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। स्वामी जी से ही प्रेरित होकर आज मैं आदिवासी लोगों के हितों के लिये निरन्तर कार्य कर रही हूं।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी ने स्वामी अग्निवेश जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी के कार्यों को देखकर हमने अपना पूरा जीवन समाज को समर्पित किया।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी एक आंदोलन थे, वे कोई साधारण मानव नहीं थे। स्वामी अग्निवेश जी बचपन से ही त्याग के मार्ग पर चलते रहे। उनका जीवन क्रांतिकारी था। उनके अंदर महिलाओं के उत्थान की भावना हमेशा उद्वेलित होती रहती थी। वे समाज में महिलाओं की बराबरी की वकालत करते रहते थे।

नरेला, दिल्ली से पधारे श्री रामपाल आर्य जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने अपना पूरा जीवन समाज के कार्यों के लिए समर्पित किया। वे कभी भी असत्य से समझौता नहीं करते थे।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजेश याज्ञिक जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी का पूरा जीवन समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के उत्थान के लिए समर्पित रहा।

आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश का जीवन निराला था। उनका साहस देखते ही बनता था। आर्य समाज में आज वैसा व्यक्तित्व देखने को नहीं मिलता। स्वामी अग्निवेश जी वास्तव में अग्नि थे। स्वामी अग्निवेश जी से प्रेरित होकर हजारों युवाओं ने अपने आपको आर्य समाज में झोंक दिया।

डॉ. एम.डी. थॉमस जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी के द्वारा किये गए कार्य मुझे हमेशा याद रहेंगे। उन्होंने स्वामी अग्निवेश जी के साथ मिलकर किये गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण सुनाया। डॉ. थॉमस ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे।

आचार्य येसी जी ने स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें महामानव बताया। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी से मिलने पर हमारे धर्मगुरु दलाई लामा जी भी कहा करते थे कि यह मेरा सौभाग्य है जो स्वामी अग्निवेश जी से मिलने का मौका मिला।

आचार्य मेघश्याम जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी के बाद ऐसा लगता है आर्य समाज शिथिल हो गया है। स्वामी

अग्निवेश जी के जाने के बाद से न तो अखबारों में समाचार आता है और न ही टी.वी. पर आर्य समाज की चर्चा दिखाई एवं सुनाई देती है।

कार्यक्रम के अन्त में बंधुआ मुक्ति मोर्चा के विशिष्ट कार्यकर्ताओं को शॉल, प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले कार्यकर्ताओं में श्री राजेश याज्ञिक अलवर, राजस्थान, श्रीमती शशि अहीरवार गुना, मध्य प्रदेश, श्री नत्थू सिंह चित्रकूट, उ. प्र., श्री गफ्फार खान, शिवपुरी, मध्य प्रदेश एवं सरदार हरभजन सिंह शिवपुरी, मध्य प्रदेश, श्री अश्विनी, अग्नियोग आश्रम बहल्पा गुरुग्राम, हरियाणा, श्री मायाराम सूर्यवंशी फरीदाबाद, हरियाणा, श्री रामशरण पाली, गुरुग्राम, श्री भानू प्रताप गढ़ी, नई दिल्ली आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्मृति सभा में स्वामी सोम्यानन्द, मानव सेवा प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री चन्द्रदेव शास्त्री, कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री तथा श्री सोमदेव शास्त्री, श्री मधुर प्रकाश शास्त्री, श्री बलजीत सिंह आदित्य, श्री राम कुमार आर्य, श्री ऋषिपाल शास्त्री, आर्य समाज नवी करीम, दिल्ली, श्री तोताराम भील, फरीदाबाद जिले के सभी डेरा प्रधान विशेष रूप से उपस्थित थे।

स्मृति सभा को सफल बनाने में सर्वश्री श्री विष्णुपाल कोषाध्यक्ष, श्री अशोक कुमार वशिष्ठ, श्री जावेद, श्री सोनू तोमर, श्री संतोष कुमार, श्री मकेन्द्र कुमार, श्री विष्णु भण्डारी के अतिरिक्त श्री प्रवीण पहलवान, श्री धर्मेन्द्र कुमार, श्री रविन्द्र कुमार, श्री ललन राय, श्री माधो सिंह, श्रीमती प्रभा देवी आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम की सफलता एवं सभी महत्त्वपूर्ण आमंत्रित महानुभावों की उपस्थिति के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने सभी को आश्वस्त किया कि वे स्वामी अग्निवेश जी के द्वारा चलाये गये बंधुआ मुक्ति, मानव अधिकार, धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड, नारी उत्पीड़न, जातिवाद, नशाखोरी, साम्प्रदायिकता, भष्टाचार एवं शोषण आदि मुद्दों के अभियान को गति प्रदान करने में कोई कमी नहीं रखेंगे। उसके लिए आप सभी का सहयोग अपेक्षित रहेगा। शान्ति पाठ के बाद सभा सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् सभी ने भोजन ग्रहण किया।

आर्य समाज सैक्टर–32डी, चण्डीगढ़ के तत्वावधान में श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर

चार दिवसीय कार्यक्रम भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों की रही धूम

आर्य समाज सैक्टर–32डी, चण्डीगढ़ में गत 5 सितम्बर से 8 सितम्बर, 2024 तक श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में चार दिवसीय विशेष आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचन एवं ओजस्वी युवा भजनोपदेशक श्री प्रताप वैदिक के भजनों का शानदार कार्यक्रम चला। इस अवसर पर अथर्वेदीय यज्ञ आयोजित किया गया था जिसके ब्रह्मा पद पर स्वामी आर्यवेश जी एवं सह–ब्रह्मा पद को आर्य समाज के प्रतिष्ठित धर्माचार्य श्री धीरेन्द्र शास्त्री जी ने सुशोभित किया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का कुशल संयोजन आर्य समाज के कर्मठ एवं ऊर्जावान प्रधान श्री योगराज चौधरी ने किया। उनकी कार्यशैली एवं संयोजन शक्ति अत्यन्त प्रशंसनीय थी। प्रत्येक कार्यक्रम ठीक समय पर प्रारम्भ और सम्पन्न होता

था। यह पहली बार इस आर्य समाज में देखने को मिला। कार्यक्रम प्रातः 7 से 9 बजे तक एवं सायं 5 से 8 बजे तक चलता रहा। दिनांक 8 सितम्बर, 2024 को प्रातःकाल यज्ञ की पूर्णाहुति एवं मध्यान्ह कार्यक्रम का समापन विधिवत रूप से हुआ।

इस चार दिवसीय कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक सिद्धान्तों की सरल एवं सामान्य व्यक्ति को समझ आने वाली व्याख्या प्रस्तुत कर श्रोताओं का दिल जीत लिया। जीवन के विविध आयामों से जुड़े विषयों को वैदिक मन्त्रों के द्वारा स्वामी जी ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत करके श्रोताओं को जीवन की सफलता एवं सार्थकता के सूत्र समझाये। समापन सत्र में स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्‌बोधन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज की स्थापना के 150वें वर्ष को केन्द्रित करके रहा। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी के अनेक महत्त्वपूर्ण संस्मरण सुनाकर उपस्थित जन–समूह को अत्यन्त प्रभावित किया। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी सम्पूर्ण क्रांति के पुरोधा थे। उन्होंने कोई ऐसा विषय नहीं छोड़ा जो समाज के लिए महत्त्वपूर्ण हो और उस पर महर्षि दयानन्द जी ने अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत न किया हो। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महान् वेदज्ञ, महान् दार्शनिक, महान् योगी, महान् समाज सुधारक, स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रेरणास्रोत, नारी जाति एवं दलित वर्ग के प्रबल के प्रबल प्रवक्ता, आर्य भाषा हिन्दी के समर्थक, महान् गो–रक्षक, निःशुल्क, अनिवार्य एवं समान शिक्षा के पक्षधर, धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के विरोधी, सामाजिक न्याय के पोषक, आर्थिक असमानता के विरुद्ध आवाज उठाने वाले ऐसे महापुरुष थे, जो सदियों के बाद कभी जन्म लेते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी भी महाभारत के बाद पहले ऋषि भारत में पैदा हुए जिन्होंने पूरे विश्व के कल्याण की भावना से वेदों को पुनः प्रतिस्थापित किया और उपलब्ध कराया। वे अपने सभी कार्यों एवं सिद्धान्तों की कसौटी वेद को मानते थे। उनकी मान्यता थी कि जो वेद के अनुकूल है वह सही और जो वेद के प्रतिकूल है वह गलत। इसी तुला के आधार पर उन्होंने सभी मत–सम्प्रदायों एवं विचारधाराओं में उपलब्ध असत्य को उजागर किया और सत्य के प्रति वे सदैव आग्रही रहे। वे पूरी मानवता के उपकार को अपना परम उद्देश्य मानते थे।

समापन सत्र में श्री प्रताप वैदिक के अतिरिक्त आर्य समाज के प्रधान श्री योगराज चौधरी के भी भजनों का शानदार कार्यक्रम रहा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती ज्योतिका आहूजा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। श्रावणी उपाकर्म के इस विशेष कार्यक्रम की सफलता में आर्य समाज के धर्माचार्य श्री धीरेन्द्र शास्त्री जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। पूरे आयोजन की व्यवस्था में शास्त्री जी अत्यन्त सक्रिय थे। उन्होंने ही सभी विद्वानों को आमंत्रित करने और उनकी व्यवस्था को समुचित रूप से संभालने में विशेष रुचि से कार्य किया। कार्यक्रम में स्वामी जी के साथ विशेष रूप से चारों दिन श्री बिरजानन्द जी एवं श्री राम निवास आर्य जी भी सम्मिलित रहे। आर्य समाज की ओर से उनका भी विशेष सम्मान किया गया। हरियाणा सरकार में नियुक्त लोक सम्पर्क अधिकारी श्री कृष्णचन्द्र द्वारा लिखित पुस्तक का भी इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से विमोचन किया गया। कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. विक्रम विवेकी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, समाजसेवी श्री सुशील भाटिया, श्री रमेशचन्द्र शास्त्री, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रचारक मेजर विजय आर्य, श्री अशोक आर्य, श्री रघुनाथ आर्य, कर्नल धर्मवीर, डॉ. ओम प्रकाश सेतिया, श्री विजय मेहन आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे।

आर्य समाज के प्रधान श्री योगराज चौधरी के नेतृत्व में समाज के मंत्री श्री श्याम गाबा, कोषाध्यक्ष श्री हरीश बजाज, उपप्रधान श्री वेदपाल आर्य, प्रचारमंत्री श्री राजवीर आर्य, श्री एस.के. मल्होत्रा, श्री प्रदीप लांबा, श्री दलवीर आर्य, श्री अनिल ओबेराय, श्री एस.के. टंडन, श्रीमती सन्नी देवी व श्रीमती वीना आर्या ने विशेष पुरुषार्थ किया। समाज के सेवक श्री कश्मीर सिंह की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है। वे एक बड़े समर्पित कार्यकर्ता हैं। कार्यक्रम के चारों दिन प्रातराश

एवं भोजन की व्यवस्था सभी श्रोताओं के लिए नियमित रूप से चलती रही और अन्तिम दिन विशेष ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

इस चार दिवसीय कार्यक्रम के दौरान स्वामी आर्यवेश जी हंसराज डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर–6 पंचकुला में साक्षरता दिवस के उपलक्ष्य में व्याख्यान देने के लिए पहुंचे। जहाँ स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती जया भारद्वाज और मैनेजर श्रीमती जसकिरण ने उनका शॉल एवं पौधा भेंटकर स्वागत किया। स्कूल के धर्माचार्य श्री राम प्रसाद शास्त्री ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर प्रिंसिपल जया भारद्वाज जी को जन्मदिन की बधाई दी। डी.ए.वी. स्कूल द्वारा बच्चों को संस्कारित करने के विशेष प्रयास की भी प्रशंसा की। विदित हो कि स्कूल के बच्चों के द्वारा भजन आनन्दवेला कार्यक्रम में प्रस्तुत किये गये भजनों से सभी श्रोता अत्यन्त मन्त्र मुग्ध हुए।

स्वास्थ्य चर्चा

कब्ज : कारण एवं निवारण

प्रत्येक सभ्य स्त्री-पुरुष आज कब्ज से पीड़ित हैं और कब्ज ही प्रत्येक रोग की जननी है इसलिए कब्ज का जरा विस्तार से अध्ययन करना आवश्यक है और यह जानना भी कि सचमुच कब्ज के क्या माने हैं? पेट साफ रहने में और कब्ज में क्या अन्तर है? यह किस प्रकार पैदा होता है? इससे किस प्रकार बचा जा सकता है? और यदि दुर्भाग्य से कब्ज रहने लग गया हो तो इससे मुक्ति किस प्रकार मिल सकती है? अब मैं एक-एक करके इन सब बातों पर विचार करूँगा।

1. कम बार शौच होना- ऊपर मैंने कहा है कि जो दिन में केवल एक बार भोजन करता है उसे भी एक बार शौच अवश्य होना चाहिए; अतः यदि सारे व्यक्तिगत भेदों एवं विशिष्टताओं को भी पूरा-पूरा ध्यान में रखकर कहा जाये तो भी यदि चौबीस घंटे में कम से कम एक बार भी शौच न हो तो कब्ज रहता है, ऐसा समझा जाना चाहिए।

2. मल 0की मात्रा की कमी- कई बार शौच होने पर भी मल की मात्रा में कमी होना। ऊपर मैंने बतलाया है कि शौच स्वाभाविक होने पर अधोगामी आंत के भाग का सारा मल बाहर हो जाता है। यदि यह न होता हो अर्थात् अधोगामी आंत का सारा मल एक बार शौच होने में ही न निकल जाता हो तो इसका अर्थ यह है कि मल का कुछ न कुछ भाग आंतों में समय से अधिक देर तक पड़ा रहता है। ऐसी हालत में जो दिन में दो तीन बार शौच जाता हो, तो भी उसे कब्ज रह सकता है। यह कब्ज का दूसरा प्रकार है और इस प्रकार के कब्ज से अधिकतर लोग पीड़ित रहते हैं। यहां मैं अपने पाठकों को सचेत कर देना चाहता हूँ कि किसी को दो-तीन या अधिक बार भी शौच हो तो यह नहीं समझना चाहिए कि वह कब्ज से निश्चयात्मक रूप से मुक्त है।

3. नमी की कमी- जब मल समय से अधिक देर तक आंतों में रहता है तो उसकी नमी को आंतें आवश्यकता से अधिक सोख लेती हैं और फलतः मल सूखकर कुछ कड़ा और मात्रा में कम हो जाता है। उसके निकलने में कठिनाई होती है और जोर लगाना पड़ता है। शौच रोज होने पर भी यदि ऐसा हो तो उसे कब्ज ही कहेंगे। मल के आंतों में देर तक रहने के कारण उसमें से जहरीली गैस निकलने लगती है जो शरीर में सोखी जाकर अनेक प्रकार की गड़बड़ी पैदा करती है।

4. कब्ज के भेद-कब्ज के दो भेद हैः-

(अ) छोटी आंतों का कब्ज। इसमें भोजन के सरककर बड़ी आंतों में आने में स्वाभाविक से अधिक समय लगता है। यद्यपि वह बड़ी आंतों में आवश्यक समय तक ही रहता है और समय से बाहर भी निकलता है।

(ब) बड़ी आंतों का कब्ज। इसमें मल के बड़ी आंत में पहुंचने में विलम्ब नहीं होता, पर मल के आंतों से निकलने में आवश्यकता से अधिक समय लगता है।

कब्ज का शारीरिक कारण जानने के लिए हमें जानना चाहिए कि शौच होना इन तीन बातों पर आश्रित हैः-

1. शौच को बाहर करने की शक्ति (जो नाड़ी-मंडल और मांसपेशियों की शक्ति पर निर्भर करती है।)

2. मलमार्ग।

3. मल।

इन तीनों बातों में से किसी में भी गड़बड़ी होने पर कब्ज उत्पन्न हो जाता है। पेट की या आंतों की मांसपेशियों की कमजोरी के कारण अथवा स्नायुशक्ति की न्यूनता के कारण, शक्ति अपर्याप्त हो जाने से कब्ज होते देर नहीं लगती है। इसी प्रकार बाहर या भीतर मल-मार्ग में किसी गांठ के या गर्भिणी के गर्भ या अन्य गांठों के कारणा भी कब्ज रहने लगता है। इस प्रकार कल के, जिसे आंतों में से होकर आना पड़ता है, कड़े होने अथवा अधिक होने पर भी कब्ज हो जाता है।

5. कब्ज के साधारण कारण अब हमें साफ तौर पर जान लेना चाहिए कि आदतन कब्ज कैसे रहने लगता है। अधिकांश लोगों के कब्ज का कारण केवल शरीर की अक्रियाशीलता है। उन्हें इसलिए कब्ज नहीं होता कि अन्न-प्रणाली में कोई विशेष रोग हो गया है, अथवा शरीर में किसी प्रकार की खराबी पैदा हो गयी है बल्कि उसका कारण हमारी गलत आदतें हैं और हम उन्हें आसानी से सुधार सकते हैं। मैंने पहले ही बताया कि कब्ज आधुनिक सभ्यताजनित रोग है। कार्याधिक्य के कारण हाजत होने पर भी हम शौच नहीं जाते, शर्म की वजह से भी हम शौच की हाजत को रोकते हैं-खासकर स्त्रियां। इस प्रकार सभ्यता कब्ज की जन्मदात्री है। गांवों में जहां लोगों को कुछ न कुछ काम करते रहना पड़ता है, कब्ज कम होता है और शहरों में, जहां ऐसे धंधे बढ़ती पर हैं कि जिनमें आदमी को बैठकर काम करना पड़ता है, स्वभावतः कब्ज पैदा होता है।

इन साधारण कारणों के अलावा मनुष्य को बहुत से ऐसे कारणों से भी कब्ज पैदा होता है जिन्हें बहुत कुछ वह स्वयं दूर कर सकता है। जैसे अनुचित खान-पान, कसरत कतई न करना या कम करना, तंबाकू का अत्यधिक प्रयोग, चाय, काफी एवं दूसरे विशैले पदार्थों का व्यवहार, शौच के समय की अनिश्चितता, रेचक औषधियों का आमतौर से उपयोग, विज्ञापित औषधियों का एवं मित्रों द्वारा बतायी औषधियों का प्रयोग।

चिकित्सा

यहां इन कारणों पर मैं जरा विस्तार से विचार करने की आवश्यकता समझता हूँ; क्योंकि इन पर विचार करने से कब्ज को दूर करने का रास्ता निकल आयेगा। मैंने पहले ही बताया है कि कब्ज की आदत शारीरिक कार्य की अपूर्णता से सम्बन्धित है और यह गड़बड़ी आदत में दाखिल होने के पहले ही उपाय करने पर आसानी से चली जाती है। प्रत्येक चिकित्सक का यह कर्त्तव्य है कि वह जान ले कि इनमें किन कारणों से रोगी को कब्ज रह रहा है और उन्हें उससे बचाये। उसे अपने रोगी को शरीर की पाचन और निष्कासन क्रिया का भी ज्ञान करा देना चाहिए, ताकि रोगी समझ ले कि उसे साफ शौच होते रहने की बड़ी आवश्यकता है और वह इसके लिए प्रयत्नशील है। कई रोगियों के लिए तो बहुत साधारण नियम बड़े काम के होंगे।

जैसे (क) अधिक जल पीना अथवा सोते समय और सबेरे उठने पर एक-एक गिलास ठंडा पानी पीना; (ख) चाय कम पीना अथवा चाय बंद कर देना; (ग) अधिक फल खाना, (घ) भाप से उबली हुई पालक, सेब अथवा नासपाती का प्रयोग कई बार कई प्रकार के कब्ज के रोगियों का कब्ज दूर करने में सफल हुआ है। (च) कई लोगों का कब्ज खेल-कूद, तैरने, घुड़सवारी अथवा तेजी से टहलने से जा सकता है।

और भी अन्य लोगों का कब्ज यदि वे केवल नित्य समय पर शौच जायें और सच्चे मन से इच्छा करें कि उनका पेट साफ होने लगे, तो भी उनका कब्ज जा सकता है। कब्ज से बचने का एक अति साधारण उपाय यह है कि शौच की हाजत को न टाला जाये और न रोका जाये।

इनमें से किसी एक या अनेक नियमों का पालन करने से साधारण कब्ज के रोगी का कब्ज चला जा सकता है और उसे नित्य शौच होने लग सकता है। परन्तु पुराने रोगियों को पूर्ण लाभ के लिए समुचित चिकित्सा करानी पड़ सकती है। इनमें से अधिकांश रोगियों को तो कब्ज इसलिए रहता है कि वे बहुत अधिक भोजन करते हैं अथवा उनके खाद्यों का मेल ठीक नहीं होता। इस प्रकार के रोगियों को भोजन का उचित ज्ञान होना आवयक है। इस रोग के अधिकांश रोगियों को तो केवल भोजन सुधार द्वारा रोगमुक्त किया जा सकता है। साधारण रोगियों के लिए, मालिश, जल-चिकित्सा या विद्युत् चिकित्सा की कोई आवयकता नहीं है। इस चीज को प्रत्येक चिकित्सक को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए और यदि वह यंत्रों की चकाचौंध में न पड़ा हो तो वह कब्ज के रोगियों को बहुत साधारण नियमों पर चलाकर उनका कब्ज दूर कर सकता है। भोजन चिकित्सा उस सत्य पर आधारित है कि कई प्रकार के खाद्यों का मिलन भी कब्ज पैदा करता है। बंगला में एक कहावत है कि-

जाई कि ना जाई जायोया इ उचित
खाई कि न खाई ना खाओया इ उचित

मतलब- जायं (शौच) कि न जायं यह द्विविधा हो इनमें तो जाना ही उचित है और खायं न कि न खायं वह द्विविधा हो मन में तो न खाना ही वाजबी है।

मेल मल वाहिनी आंतों की गति में तीव्रता लाता है। साधारणतः खाद्यों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। एक जो कब्ज पैदा करते हैं, दूसरे जो पेट के साफ होने में सहायक होते हैं। प्रत्येक प्रकार के प्रोटीन और वेतसार का अत्यधिक प्रयोग कब्ज पैदा करता है, जब कि फल और तरकारियों में रेचक गुण होता है। इस प्रकार मांस, अंडे, दूध, चीनी, गुड़, छंटे चावल और मैदा का अधिक उपयोग -ये सभी कब्ज उत्पन्न करते हैं। प्रायः सभी फल, खास तौर पर संतरा और अंगूर, कुछ तरकारियां जैसे टमाटर, ककड़ी, गाजर, प्याज, पालक, कई खाद्य जैसे शहद, मखनिया दूध (मक्खन निकाला हुआ दध) में निश्चयात्मक रूप से रेचक गुण सम्पन्न हैं। इस प्रकार खाद्यों का मेल यदि अक्लमंदी से मिलाया जाये तो वे कब्ज दूर करने में बहुत सहायक सिद्ध होंगे।

साधारण कब्ज की चिकित्सा में भोजन के बाद कसरत का नंबर आता है। जिन्हें अपने काम में अधिक चलना-फिरना पड़ता है उन्हें कब्ज बहुत कम होता है। स्त्रियों और बूढ़े लोगों के लिए तेजी से टहलना बहुत लाभकर है। कुछ कसरतों और आसनों से पेट की मांसपेशियों और स्नायुओं की चेतनता बढ़ती है।

अंत में कुछ ऐसे साधारण नियमों का जिक्र, जिनका उल्लेख मैं पहले कर चुका हूँ, यहां करना चाहता हूँ।

1. पेशाब पाखाने की हाजत को कभी न टालो, न रोको।

2. खूब कसरत करो और गहरी सांस का अभ्यास करो।

3. अपने भोजन में प्रोटीन और वेतसार की मात्रा घटाकर आधी से भी कम कर दो, फल और तरकारियों की मात्रा तिगुनी चौगुनी कर दो।

4. शौच के लिए समय निश्चित कर लो और उस वक्त शौच अवश्य जाओ।

5. कभी किसी रेचक दवा का प्रयोग न करो।

6. भोजनों के बीच में खूब जल पीओ।

जो कोई उपर्युक्त साधारण नियमों की आदत डाल लेगा, वह सभ्यता के इस संहारक रोग से बचा रहेगा और जो इस रोग के चंगुल में फंस गया है, वह इन नियमों पर चलकर रोग मुक्त हो सकेगा।

The Chief Object of the Arya Samaj

- By : Dr. Siraj Hussain

The chief object of the Arya Samaj is to do good to the world, i.e., to make physical, spiritual and social improvement.

This principle enunciates that welfare of the Society, which includes not only those who are followers of Arya Samaj but includes even others has to be given prime importance by the followers of Arya Samaj. We can deduce from this principle that Arya Samaj accepted that all men and women are equal and there is no distinction of caste, creed, sex and religion.

Qur' anic Inscription:

Serve Allah and do not join any partner with Him. And do good to parents, relatives, orphans, those in need, neighbours who are relatives, neighbours who are strangers, friends and associates, companions in travel and servants. Allah does not love the arrogant and vainglorious.

7. We should treat all with love, and justice according to their deserts.

This principle highlights the importance of justice in the Society. In a caste ridden society classified according to one's accident of birth, it was a path breaking principle of Arya Samaj to provide for justice to all sections of society. Despite all that we have achieved in the last two hundred years, large sections of our society continue to be socially discriminated and economically exploited, solely on the basis of accident of birth.

Qur'anic Inscription:

Fatima of Bani Makhzoom was brought to the Prophet. She was caught in theft. Prophet did not pardon her.

8. We should dispel ignorance and diffuse knowledge.

Swami Dayanand in his 'Satyarth Prakash' has said "blessed are the men and women whose mind is engaged in the pursuit of knowledge". Removal of ignorance from society by lighting the lamp of knowledge was one of the prime objectives of Swami Dayanand and, therefore, he advocated that every one, irrespective of caste, has a right to study the Vedas. The establishment of network of educational institutions to impart knowledge was one of the ways in which the Arya Samaj implemented the principle for diffusion of knowledge.

Qur'an also attaches importance to knowledge.

9. Nobody should remain contented with his personal progress. One should count the progress of all as one's own.

Qur'an, too, ordains one and all to work for the welfare of the poor, downtrodden and so forth. Help the helpless, it says.

10. Every one should consider oneself as bound in obeying social and all benefiting rules, but every one is free in matters pertaining to individual well-being.

In this principle, the welfare of society has been given priority over the welfare of individual. Freedom is given to the individual in his personal matters alone. Whatever affects the society at large has to be done in the interests of larger public good.

By laying down the above-mentioned principles, Arya Samaj provided a new direction to the Hindu thought which was being questioned by the western educated Indian elite. It was proven by re-inventions of these principles that many of the social practices in the Hindu society were in violation of the original teachings of Vedas.

Thus, these principles provided for equality of opportunity for all, particularly for those who were denied equal opportunity for centuries on the basis of birth in a particular caste. It is also clear from the above principles that they were to become precursor of a new awakening among educated Hindus which was to result later in far reaching reforms in Hindu Personal Law.

EDUCATIONAL WORK OF SWAMI DAYANAND

We have already discussed the 8th principle of Arya Samaj, which is for propagation of knowledge in society which would dispel ignorance. We all know that Swami Dayanand had become disciple of Swami Virajanand of Mathura, a blind guru, who was knowledgeable of Vedic inscriptions. It was an association of this guru Virajanand that Swami Dayanand could see a new world and his faith in Almighty God became strong. It was also Swami Virajanand who taught Swami Dayanand that idolatry was not sanctioned in the Vedas and the vedic religion was quite different from Hinduism practised at the time of Swami Dayanand. As a guru dakshina, it was demanded from Swami Dayanand that he will devote his remaining life to the teachings of vedas as the men and women had forgotten the Divine Vedic religion and fallen into evil ways. The remaining life of Swami Dayanand was thus spent in accordance with the will of his guru Swami Virajanand.

Even though a number of Vedic pathshalas were founded by Swami Dayanand in his lifetime but they were not so successful as they could not draw the kind of students envisaged by Swami Dayanand as a result of which these pathshalas had to be closed. However, it was after his death that Dayanand Ango-Vedic High School in Lahore was established by Arya Samaj in 1886. It was in this school that lala Hansraj became the first principal and Lala Lajpat Rai became his co-worker. Within a short period of 50 years, DAV schools and colleges were established not only in several towns and cities of undivided Punjab but also other parts of the country. Most of the Brahmins at that time wanted to follow the Sanskrit saying: "Teach not women and Shudras". As expected, there was a lot of opposition for setting up of schools for girls but it was due to commitment of Arya Samaj that a number of schools for girls were set up in Punjab. In 1901, Lala Munshi Ram established Gurukul Kangri at Haridwar, an institution, which was sought to be different from English schools set up by missionaries in colonial India.

The movement for establishment of Gurukul was basically a kind of revolution within Arya Samaj. A number of leaders of Arya Samaj in Punjab who were originally involved in setting up of DAV college were not satisfied with the educational programme of the college and the importance given to the teachings of English language and Western literature and sciences at DAV college. They also thought that due importance was not given to Sanskrit and Vedas at DAV college. Lala Munshi Ram continued to advocate that only Hindi should be used as a medium of instruction in the college. However, he had a number of opponents and therefore, Lala Munshi Ram and his supporters resolved to set up Gurukul. Despite the initial financial difficulties, the Gurukul was established on the banks of river Ganga at village Kangri on the foothills of Himalayas. Initially, it was thought that the Gurukul system would be a break from the colonial system of education and students will be under constant supervision and watch of their teachers. How far has Gurukul filled this onus is not a subject which will be discussed here but I think that it needs an in-depth study and closer examination by scholars of Arya Samaj.

A similar institution was established by Rabindranath Tagore in 1901 at Shantiniketan. He also felt that an educational institution should be established not in crowded cities but in rural surroundings, in the middle of forest, which would give students an opportunity to experience the nature at its best. Both these institutions have become universities over a period of time and it is a matter of enquiry as to whether they have lived up to the expectations, aims and objectives with which they were established as unique institutions of teachings and learning?

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2024-26

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि आर्य समाज ब्यापुर, बिहार में मनाई गई

स्वामी अग्निवेश जी मानवता के मसीहा थे – रामानन्द प्रसाद

स्वामी अग्निवेश जी महाराज का जीवन निराला था – श्री धनंजय कुमार

स्वामी अग्निवेश जी के कार्यों को आगे बढ़ाना लक्ष्य – अरुण कुमार आर्य

दिनांक 11 सितम्बर 2024 को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर स्मृति एवं प्रेरणा सभा का आयोजन आर्य समाज ब्यापुर, बिहार के सभागार में समाज के प्रधान श्री धनंजय कुमार जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर अनेकों गणमान्य आर्यनेता एवं आर्यजन उपस्थित रहे।

बिहार के प्रतिष्ठित आर्य नेता श्री रामानन्द प्रसाद आर्य जी ने स्मृति एवं प्रेरणा सभा में अपनी ओर से स्वामी अग्निवेश जी को स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी का जीवन हम सभी के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। स्वामी अग्निवेश जी जैसा व्यक्तित्व वर्तमान समय में आर्य समाज में दूर–दूर तक दिखाई नहीं देता। उन्होंने कहा कि स्वामी जी अपनी सुख–सुविधा का त्याग करके अपने जीवन की आखिरी सांस तक समाज में दबे कुचले, गरीब, बेसहारा, बंधुआ मजदूरों की लड़ाई लड़ते रहे। उनके द्वारा बंधुआ मजदूरों के लिए किया गया कार्य मील का पत्थर साबित हुआ है। स्वामी अग्निवेश जी जुल्म एवं अन्याय के खिलाफ सशक्त आवाज थे। खेद है कि समय रहते आर्य समाज के लोगों ने स्वामी अग्निवेश जी को नहीं पहचान।

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री अरूण कुमार आर्य ने कहा कि इस स्मृति सभा में हम नव जवान संकल्प लेते हैं कि आर्य समाज एवं आर्य युवक परिषद् को सशक्त कर स्वामी अग्निवेश जी के स्वप्न को पूरा करेंगे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में आर्य समाज, ब्यापुर के प्रधान श्री धनंजय कुमार जी ने कहा कि लोग अपने और अपने परिवार के लिए जीते और कमाते हैं, लेकिन स्वामी अग्निवेश जी दबे, कुचले लोगों की आवाज बनकर अंतिम सांस तक कार्य करते रहे। ऐसे महामानव धरती पर कभी–कभी ही जन्म होते हैं। स्मृति सभा में अन्य वक्ता सर्वश्री मिथिलेश कुमार, रामनरेश, शन्नी आर्य, बिमलेश कुमार, विकास कुमार आदि ने भी स्वामी अग्निवेश जी को अपनी–अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित किया तथा उनके जीवन से प्रेरणा लेकर समाज में एवं राष्ट्र के लिए कार्य करने का संकल्प लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–9868211979

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : ***sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com*** वैबसाइट : ***www.vedicaryasamaj.com***
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।